June 16, 2019

पवित्र त्रित्व का पर्व

(Feast of Holy Trinity Sunday)

(Jn 16:12-15)

ख्रीस्त में मेरे प्यारे भाईयों, बहनों और बच्चों। आज प्रेरित काल के दूसरा इतवार है और आज माता कलीसिया पवित्र त्रित्व का पर्व मना रही है। इस पर्व के द्वारा हम एक ही ईश्वर में अपना विश्वास व्यक्त करते है। हम विश्वास करते हैं कि केवल एक ही ईश्वर है, परन्तु उसमें तीन स्वरुप है। कलीसिया के शुरुवात से प्रेरितों ने जो आशिष की प्रार्थना पढते आ रहे थे, आज भी हम उसे दोहराते है। "हमारे प्रभु ईसा मसीह की कृपा, पिता ईश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा का साहचर्य हम सबों को प्राप्त हो"।

पवित्र त्रित्व एक महान रहस्य है, जिसे हम अपनी सीमित बुद्धि से विश्लेषण करने के बजाय, ह्रदय से स्वीकार करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर हम अपने दिमाग और बुद्धि से सोचते हैं कि एक ईश्वर में कैसे तीन अलग अलग स्वरुप होते है तो निश्चय ही हम विफल हो जायेंगें। संत अगुस्तिन जो बाइबिल के महान पंडित है, एक बार त्रित्व के रहस्य के बारे में सोचते सोचते समुद्र के किनारे टहल रहे थे। वहॉ उन्होंने देखा कि एक बालक समुद्र की सीपी के एक टुकडे से समुद्र पानी को पास के ही एक गड्डे में भर रहा था। क्या कर रहे हो? संत अगुस्तिन ने बच्चे से पूछा। बच्चे ने जवाब दिया, मैं इस समुद्र के पानी को मेरे इस छोटे गड्डे में भरना चाहता हूँ। संत अगुस्तिन ने हॅसते हुए कहा "तुम ऐसा करने में कभी सफल नहीं होओगे। समुद्र तो अत्यन्त विशाल है और ये गड्डा बहुत छोटा"। इस पर बालक भी हॅस पडा और बोला, "आप भी ठीक यही कर रहे हैं। ईश्वर इस विशाल समुद्र के समान है और आपका विवेक और बुद्धि इस छोटे गड्डे समान। क्या आप यह समझते है कि आपके सीमित ज्ञान के द्वारा आप त्रिएक इश्वर के रहस्य खोजने में सक्षम होंगे?

जी हॉ, प्यारे भाईयों और बहनों, यदि ईश्वर हमारे सीमित ज्ञान द्वारा पूर्णतः समझा जा सकता है तो वह ईश्वर नहीं है परन्तु इमारे समान एक निरे मनुष्य है। इसलिए जिस प्रश्न का उत्तर कभी दिया न जा सके जैसे – ईश्वर कौन है? एक ही ईश्वर में किस

प्रकार तीन स्वरुप पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हो सकते हैं? आदि पूछने के बजाय हमें यह सेचना चाहिए कि इन तीनों दिव्य स्वरुपों ने हमारे लिए क्या क्या किया है।

ईश पिता जो अबोध्य, अदृष्य और अनिर्वचनीय है, अपने असीम प्यार में हमें अपने स्वरुप बनाया और सब प्राणियों में से सबसे उत्तम और सर्वश्रेश्ठ स्थान प्रदान किया। उसी पिता ने हमें पापों की गुलामी से मुक्त करने के लिए अपने एकलौते पुत्र को इस संसार में भेजा।

पुत्र येसु ख्रीस्त ने स्वयं को पूर्ण रुप से समर्पित कर पिता की इच्छा पूरी की। उन्होंने हमें, पिता के स्वरुप को प्रेममय, कृपालु, करुणामय, अनुकम्पा आदि गुणों के रुप में प्रकट किया और हमारे पापों के लिए क्रूस पर आत्म बलि चढाये।

इसी प्रकार पवित्र आत्मा, पिता और पुत्र से प्रसृत होता है और कलीसिया के प्रत्येक सदस्य में विद्यमान है। पवित्र आत्मा कलिसिया के हर एक सदस्य के ह्रदयों को पिता के प्यार से भरता है। वह एक सहायक के रुप में निरंतर हमें अपने दानों से संपन्न करता रहता है।

किस प्रकार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में ह्रदय से विश्वास करना है इस विषय पर एक छोटी सी कहानी के साथ मैं अपना प्रवचन समाप्त करना चाहता हूँ। एक बार एक धर्माध्यक्ष जहाज से यात्रा कर रहे थे। जहाज एक दूरवर्ती द्वीप पर एक दिवसीय विश्राम हेतु रुका। वहॉ धर्माध्यक्ष की भेंट तीन मछुवारों से हुई। यह जानकर कि वे ख्रीस्तीय है, धर्माध्यक्ष बहुत खुश हुए। उन्हें इस बात पर बडा आश्चर्य हुआ कि उन लोगों को प्रभु की प्रार्थना, "हे पिता हमारे..... " भी मालूम नहीं थी। धर्माध्यक्ष ने उन्हें पूछा कि वे किस प्रकार प्रार्थना करते है? उन्होंने जवाब दिया, हम स्वर्ग की ओर ऑखें उठाकर यह कहते हैं, "तूम तीन हो और हम भी तीन है, हम पर दया करो।" धर्माध्यक्ष उनकी इस प्रकार की प्रार्थना से संतुष्ट नहीं हुए। अतः उन्होंने वह पूरा दिन उन तीनों को प्रभु की प्रार्थना सिखाने में व्यतीत किया।

एक माह पश्चात धर्माध्यक्ष उसी जहाज से उन द्वीपों से वापस गुजर रहे थे, उन्होंने देखा कि तीनों मछुवारे दौडते हुए जहाज की ओर आ रहे थे। जहाज के रुकते ही धर्माध्यक्ष ने उनसे आने का कारण पूछा। उन्होंने धर्माध्यक्ष को बताया, "जो सुन्दर प्रार्थना आपने हमें

सिखायी थी, उसे हम पूरी तरह याद नहीं कर पाए। इसलिए हम पुनः उसे सीखना चाहते है"। धर्माध्यक्ष कुछ क्षणों के बाद बोले, "प्रिय बच्चों, अपने घर जाओ और अपनी वही पुरानी प्रार्थना, "तूम तीन हो और हम भी तीन है, हम पर दया करो" बोलते रहना। यही सर्वोत्तम प्रार्थना है।

जी हॉ, मेरे प्यारे भाईयों और बहनों, मछुवारों का प्रार्थना रुपी यह मंत्र हमारे ख्रीस्तीय विश्वास का सार है। ईश्वर के अस्तित्व में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की उपस्थिति को स्वीकारना ही हमारे विश्वास का उत्तम प्रकटन तथा हमारी सबसे महत्वपूर्ण प्रार्थना है। त्रित्ववादी मंत्र को हम अपने धर्मसार, दैनिक प्रार्थनाओं तथा विभिन्न संस्कारों, खास करके बपतिस्मा संस्कार के दैरान दोहराते है। आज हम पवित्र त्रित्व से विशेष विनती करें कि त्री–एक ईश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में हमारा विश्वास बढा दे और हमारे परिवारों में एकता और सामंजस्य बना रखें। पवित्र त्रित्व हम सबों को अनुग्रह प्रदान करें।

(Prepared by Sagar Diocesan Department of Social Communications)